मुरली शब्दकोष

हिन्दी मुरली में आये हिन्दी] अंग्रेजी] अरबी-फारसी भाषा व मुहावरों-कहावतों का सरलीकृत अर्थ हिन्दी भाषा में
सम्पादक की कलम से...................................

शब्दकोष के विभिन्न भागों में मुरलियों में आने वाले कठिन शब्दों का अर्थ सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है। कठिन शब्द को कोई परिभाषा नहीं दी जा सकती। देशकाल] भाषा की समझ] ज्ञान -स्तर में भिन्नता होने के कारण हर किसी के लिए कठिन और सरल शब्द का मापदण्ड अलग अलग हो सकता है।अतएव शब्दों के चुनाव में सामान्यीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। अन्यथा हम अज्ञानता व भ्रमवश शब्दों के अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। आज हिन्दी भाषा की प्रकृति और स्वरूप में निश्चय ही समय के साथ भूमंडलीकरण के दौर में बदलाव आया है। इसलिये वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुरलियों के अर्थ व भाव को अच्छे से समझने के लिए मुरली में आये कठिन शब्दों के भावार्थ जानना आवश्यक हो जाता है। हिन्दी मुरली की दिशा में यह प्रयास आपके लिए उपयोगी साबित हो ऐसा सम्पादक मंडल आशा करता है।

क्रम सं.	शब्द	अर्थ
1	**सिकीलधे**	मूल शब्द सिक से बना जिसका अर्थ अत्यन्त प्रिय, लाडले, जिस तरह लौकिक माता-पिता को बहुत प्रतीक्षा के उपरान्त पुत्ररत्न प्राप्ति पर बच्चे से बहुत सिक-सिक (Love) होना (अतिस्नेह) होती है।उसी तरह परमात्मा को भी जब 5000 वर्षोपरान्त बच्चों से संगम पर मिलन होता है] तो बच्चों से बहुत सिक- सिक होती है। (सिन्धी शब्द पर मूलतः फारसी भाषा का शब्द)
2	**16 कला सम्पन्न**	मानव स्वभाव/व्यवहार की सर्वश्रेष्ठ कला (100% सर्वगुण सम्पन्न)
3	**अंगद के समान**	अचल अडिग/कैसी भी परिस्थिति में स्थिर रहना
4	**अकर्ता**	कर्म के खाते से दूर/निर्लिप्त/निर्बंधन
5	**अकर्म**	जिस कर्म का खाता ही न बने अर्थात् सत्कर्म के खाते का क्षीण होना (देवताओं का कर्म इसी कोटि में आता है।)
6	**अकालमूर्त**	जिसका काल भी न कुछ बिगाड़ सके/अमर/मृत्युंजय स्वरूप
7	**अकालमूर्त**	जिसको काल ना खा सके/नित्य/अविनाशी
8	**अखुट**	कभी न समाप्त होने वाला लगातार अनवरत
9	**अचल-अडोल**	जो न डिगनेवाला हो और न हिले अर्थात् हमेशा स्थिर रहे।
10	**अजपाजप**	लगातार जाप करना वह जप जिसके मूल मंत्र हंसः का उच्चारण श्वास- प्रश्वास के
11	**अजामिल**	पुराण के अनुसार एक पापी ब्राह्मण का नाम जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेकर तर गया
12	**अनन्य**	एकनिष्ठ/ एक ही में लीन हो
13	**अनादि**	जिसका न कोई आदि/आरम्भ हो, न अन्त हो
14	**अन्तर्मुखता**	आत्मिक स्थिति में रहना/भीतर की ओर उन्मुख/आंतरिक ध्यानयुक्त।

15	**अन्तर्मुखी**	शान्त/जो शिव बाबा की याद में अन्तर्मुखी स्वभाव वाला हो जाये
16	**अन्तर्यामी**	मन के ज्ञाता/सबकुछ जानने वाला
17	**अभूल**	भूल न करने वाला
18	**अमल**	आचरण, व्यवहार, कार्यवाही
19	**अमानत**	एक निश्चित समय के लिए कोई चीज़ किसी के पास रखना
20	**अलबेलापन**	आलस्य (पांच विकारों पर भी भारी पड़ने वाला विकार)
21	**अलबेलापन**	गैर जिम्मेदाराना व्यवहार/कर्मआलस्य
22	**अलाएँ**	खाद, विकार
23	**अलाव**	स्वीकार करना/ज्ञान देना
24	**अलौकिक**	जो इस लोक से परे का व्यवहार करे
25	**अल्लफ**	एक परमात्मा
26	**अविद्याभव**	अज्ञानता के कारण भूल जाना
27	**अविनाशी बृहस्पति**	अविनाशी राज्यभाग (ब्रहमा के साथ)
28	**अव्यक्त सम्पूर्ण**	सूक्ष्म वतनवासी ब्रहमा
29	**अशरीरी**	शरीर में रहते हुए शरीर से अलग डिटैच/भिन्न/बिना
30	**अष्टरत्न**	सबसे आगे का नम्बर/पास विद् आनर केवल आठ आत्माएं/आठ की माला इन्हीं
31	**असल**	सही मायने में/सच/वास्तव में
32	**अहम् ब्रहमस्मि**	मैं ही ब्रहम हूं
33	**आत्मभिमानी**	देह में रहते अपने को आत्मा रूप में स्थिर रहना या अनुभव करना
34	**आत्माए अडोंमेसल रहती**	परमधाम में ऊपर परमात्मा के नीचे नम्बरवार आत्माएं अण्डे की तरह/सरीखे रहती है।
35	**आथत**	धैर्य, धीरज
36	**आदम-ईव**	सृष्टि के शुरू में आने वाले प्रथम नर-नारी (हिन्दू धर्म में मनु-श्रद्धा)
37	**आदमशुमारी**	बहुतायत/अति/जनगणना भी एक अर्थ में

38	**आप ही पूज्य आपे पुजारी**	स्वयं की (अपने देव स्वरूप की) स्वयं ही पूजा करने वाली देव वंशावली की आत्माएं जो द्वापर से अपनी ही पूजा शुरू कर देती हैं।
39	**आपघात**	आत्महत्या
40	**आपे ही तरस परोई**	देवताओं की बड़ाई और अपनी बुराई की भक्ति का गायन
41	**आशिक**	प्रेम करनेवाला मनुष्य या भक्त, चित्त से चाहने वाला मनुष्य-आत्मा
42	**आहिस्ते आहिस्ते**	धीरे धीरे
43	**इत्तला देना**	जानकारी देना
44	**उजाई माला**	बुझी हुई माला
45	**उतरती कला**	उत्तरोत्तर या सतयुग से धीर धीरे 16 कलाओं में ह्रास/कमी आना
46	**उपराम**	राम के समीप/न्यारापन निरन्तर योगयुक्त रहकर चित को सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से न्यारा हो जाना ही उपराम होना है। इस सृष्टि में अपने को मेहमान समझने से उपराम अवस्था आएगी।
47	**उल्हना**	लाहना, शिकायत, किसी की भूल या अपराध को उससे दुःखपूर्वक जताना, किसी से उसकी ऐसी भूल चूक के विषय में कहना सुनाना जिससे कुछ दुःख पहुँचा हो।
48	**ऊँ शान्ति**	मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ
49	**ऋद्धि-सिद्धि**	गणेश की पूजा यदि विधिवत की जाए, तो इनकी पतिव्रता पत्नियां ऋद्धि-सिद्धि भी प्रसन्न हो कर घर-परिवार में सुख-शान्ति और संतान को निर्मल विद्या बद्धि देती है ऋद्धि-सिद्धि यशस्वी, वैभवशाली व प्रतिष्ठित बनाने वाली होती है।
50	**एक ओंकार**	परम शक्ति एक ही है
51	**एकानामी**	एक शिव परमात्मा के अलावा किसी की याद ना रहे, मन-बुद्धि में एक शिव ही याद रहे
52	**एशलम**	जहाॅ दु:खी व अशान्त आत्माओं को शरण मिलती है।
53	**ओम्**	मैं आत्मा
54	**कखपन**	बुराई/अवगुण
55	**कच्छ-मच्छ**	परमात्मा के अवतारों के पौराणिक नाम यथार्थ- मत्स्यावतार, कच्छ,वराह
56	**कट**	विकार
57	**कब्रदाखिल**	अकाले अवसान/मृत्यु/समाप्ति

58	**कयामत**	कुरान के अनुसार कयामत के दिन भगवान मुर्दों में भी जान फूंक देंगे। कयामत के दिन ना बाप-बेटा, भाई-बहन का इस दुनिया की कीमती से कीमती चीज और ना ही किसी की सफारिश तब किसी इन्सान के काम आएगी। केवल अच्छे आमालों और इस्लाम के स्तंभों और सुन्नत तरीकों से जिंदगी गुजारने वाले इंसानों को ही जन्नत में भंजा जाएगा। पाप बढ़ जाएंगे, अधिकाधिक भूकंप आएंगे, औरतों की तादाद में मर्द ज्यादा होंगे
59	**करनकरावनहार**	सब कुछ करने कराने वाला परमात्मा
60	**करनीघोर**	जिन्हें मुर्दे की बची चीजें दी जाती हैं।
61	**कर्म**	शारीरिक अंगों द्वारा किया गया कोई भी कार्य
62	**कर्मभोग**	विकर्मों का खाता जिसे भोगना पड़ता है या योगबल से मिटाया जा सकता है।
63	**कर्मातीत**	कर्म के बन्धन से दूर/जीवन-मुक्त आत्मा/कलियुग अन्त तक 9 लाख आत्माएं अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ से कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करेंगी।
64	**कलंगीधर**	कलंक को धारण करना
65	**कलश**	गगरा, घागर, घड़ा।
66	**कल्प**	5000 वर्ष का एक चक्र का नाटक/ड्रामा
67	**कल्प-कल्पान्तर**	हर कल्प में (सतयुग से संगमयुग तक)
68	**कवच**	बख्तर/युद्ध में छाती की रक्षा के लिये उपयोगी आवरण
69	**कशिश**	आकर्षण, खिंचाव, झुकाव, रुझान।
70	**कागविष्ठा**	बहुत थोड़ा/कौए की लीद जैसा गन्दा
71	**काम कटारी**	काम विकार में जाना
72	**कामधेनु**	एक गाय जो पुराणानुसार समुद्र के मंथन सक निकली थी। पर चौदह रत्नों में से एक है, इससे जो मांगो वही मिलता है।
73	**कुख वंशावली**	गर्भ से जन्म (लौकिक)
74	**कुम्भीपाक नर्क**	पुराणों में वर्णित एक घोर नर्क
75	**कृष्णपुरी**	सतयुग में श्रीकृष्ण का राज्य
76	**कौड़ी मिसल**	कौड़ियों के मोल/मूल्यहीन

77	**कौरव**	दुःख देने वाले मनुष्य, 'जो ईश्वरीय नियम मर्यादाओं को न मानते है और न उनकी श्रीमत पर चलते है, कौरव कहलाते है!' भारत में कौरव वंशियों का महाविनाश के समय आपस में गृहयुद्ध होगा।
78	**खग्गे/कन्धे उछालना**	खुशी में रहना
79	**खलास**	खत्म/समाप्त
80	**खाद**	विकारों का लेप हो/युक्त हो
81	**खिदमतगार**	सेवाधारी
82	**खिव्वैया**	नाव को खेने वाला परमात्मा हमारी ज़िन्दगी रूपी नैया की पतवार को चला कलियुगी दुनिया से पार ले जाने वाला
83	**खिव्वैया**	तारणहार/नैया पार लगाने वाला
84	**खुदाई खिदमतगार**	ईश्वर की खिदमत या सेवा करनेवाला।
85	**खैराफत**	कुशल क्षेम/ राजीखुशी/ भलाई
86	**खोट**	दोष, अशुद्धि, किसी कार्य या व्यक्ति के प्रति मन में होने वाली बुरी भावना।
87	**ख्यानत**	अमानत या धरोहर के रूप में रखी वस्तु को हड़प लेना या चुरा लेना, बुरी नीयत से किसी दूसरे की संपत्ति का गबन कर लेना बेईमानी या भ्रष्टाचार,
88	**ख्यालात**	विचार या भाव आदि
89	**गफलत**	असावधानी
90	**गरीब-निवाज़**	गरीबों का रहनुमा/मददगार शिव परमात्मा
91	**गर्भ जेल**	गर्भ जेल में रहते कर्म बन्धन के हिसाब किताब चूकतू करना
92	**गांवड़े**	गाँव का
93	**गुरूमत**	प्रसिद्ध गुरूओं के मत पर आधारित
94	**गुलशन**	बगीचा
95	**गृहचारी**	गृहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली बुरी अवस्था/ दुर्भाग्य
96	**गोपीवल्लभ**	महाभारत में वर्णित गोप-गोपियों के अत्यन्त प्रिय श्रीकृष्ण जिनकी मुरली की धुन सुनने के लिये अपनी सुधि बुधि खोकर काम काज छोड़कर चले आते थे। वास्तव में हम बच्चे ही वही गोप-गोपियां हैं, जो नित उस परमप्रिय शिवबाबा अर्थात् गोपीबल्लभ को याद किये और मुरली सुने बिना नहीं रह सकती हैं।
97	**गोया**	मानो/अर्थात्
98	**गोरखधंधा**	गड़बड़, गड़बड़ी करनेवाला, घपलेबाजी, गोलमाल करना, अनियमितता।

99	**गोसाईं**	श्रेष्ठ, मालिक, शिव परमात्मा, स्वामी।
100	**ग्रहचारी**	कुंडली में बुरे ग्रह बैठ जाना
101	**ग्रहण**	स्वीकार करना,धारण,पहनना।
102	**चन्द्र वंशी**	त्रेतायुगी देवी देवता
103	**चात्रक**	जिज्ञासु बने रहना, हमेशा तैयार जिस प्रकार चात्रक व पपीहा पक्षी स्वाति नक्षत्र की बूंद की चाहना करता हुआ उसके इंतजार में आसमान में अपनी आंखे टिकाऐ रखता है, उसी प्रकार बच्चे बाबा की मुरली को जिज्ञासु बन कर इंतजार करते रहते है कि बाबा मुरली में क्या कहने वाला है।
104	**चैतन्य लाइट हाउस**	जैसे स्थूल लाइट हाउस सभी जहाजों को रास्ता बताता है, वैसे ही ब्राह्मण बच्चे चैतन्य रूप में अपने ज्ञान योग की आत्मिक लाइट से सभी को सही रास्ता बताते हैं।
105	**चों चों का मुरब्बा**	किस चीज से बना ये पहचानना मुश्किल/सब कुछ मिक्स
106	**छि-छि-पलीती**	गन्दा (नये जन्में शिशु के कपड़ों जैसा)
107	**जड़जड़ीभूत होना**	खोखला होना
108	**जानीजाननहार**	सर्वज्ञ/सबकुछ जानने वाला
109	**जिन्न जैसी बुद्धि**	अथक परिश्रमी (जिन्न का अर्थ भूत)
110	**जिस्मानी यात्रा**	शारीरिक यात्रा
111	**जुत्ती**	शरीर
112	**जूं मिसल**	धीरे धीरे लगातार
113	**ज्ञान की कंठी**	ज्ञान की माला/प्राप्ति
114	**ज्योत ज्योत समाना**	भक्तिमार्ग में कहते है आत्मा ज्योति मृत्यु के बाद परमात्मा ज्योति में विलीन हो जाती है
115	**झांझ**	एक वाद्ययंत्र/संगीत निकालने वाला स्थान
116	**झाड़**	मनुष्य सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष, जिसमें बताया गया है पुरी सृष्टि पर आत्माओं का फैलाओ कैसे हुआ, सारे धर्म कैसे फैले, उनकी समय समय पर गति कैसी रही। उसके बारे में स्पष्ट दिया हुआ है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ के रूप में।
117	**टाल-टालियाँ**	सभी धर्मों की विभिन्न शाखायें
118	**टिंडन**	बिच्छू-टिंडन जैसे जहरीले जीव

119	**टिक टिक**	घड़ी जैसे निरंतर टिक टिक कर चलती रहती वैसे यह ड्रामा भी सेकंड बाय सेकंड लगातार चलता रहता है।
120	**टीवार्ट**	तिराहा/तीन रास्ते
121	**टेव**	आदत
122	**डबल सिरताज**	स्वर्ग में डबल सिरताज होते देवी देवता, एक लाइट अर्थात पवित्रता का ताज और दूसरा रतन जड़ित ताज
123	**डोडा**	जवारी, ज्वारे/बाजरी कि रोटी
124	**तकदीर**	भाग्य/प्रारब्ध/किस्मत
125	**तकदीर को लकीर लगाना**	भाग्य बनाने का सुअवसर खो देना
126	**ततत्वम्**	तुम भी वही हो अर्थात आत्मा परमात्मा का रूप है।
127	**तत्ते तवे**	गर्म तवे
128	**तत्वज्ञानी**	जीवन/संसार के सार या मूल को जाननेवाला
129	**तदबीर**	अभीष्ट सिद्धि करने का साधन/उक्ति/तरकीब/यत्न।
130	**तमोगुण**	गुणों में सबसे निम्न स्तर (चार कला सम्पन्न कलियुग से/भारत मे अरबों के आक्रमण से शुरू)
131	**ताउसी तख्त**	राज्य-भाग
132	**तिजरी की कथा**	भक्ति मार्ग की सत्य नारायण की काल्पनिक कथा के मध्य में सुनाई जाने वाली कथा
133	**त्रिलोकीनाथ**	तीनों लोकों का मालिक शिव परमात्मा
134	**दग्ध करो**	खत्म करो
135	**दिलरूबा**	वह जिसमें प्रेम किया जाए/प्यारा
136	**दिव्य चक्षु**	ज्ञान का तीसरा नेत्र
137	**दुम**	पूंछ, आत्मा के निकलते ही शरीर रुपी दुम छूट जायेगा
138	**दुस्तर**	जिसे पार करना कठिन हो/ विकट/कठिन
139	**देवाला**	जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बच गया हो/ जो सर्वथा अभाव की स्थिति में हो
140	**देही**	देह को चलाने वाली/मालिक/आत्मा

141	**दो ताजधारी**	संगमयुगी ब्राह्मण का और सतयुगी देवता दोनों के आभामंडल की लाइट का ताज धारण करना
142	**दोज़ख**	नरक
143	**धणी**	मालिक
144	**धरिया**	धुरण्डी (होली के अगले दिन का एक त्यौहार)
145	**नंदीगण**	बैल की प्रतिकृति जो शिवमन्दिर में होती है कलियुग अन्त में शिव बाबा जिन दो रथों/तन (ब्रह्मा बाबा व गुलजार दादी) का सहारा लेते हैं, यही नन्दीगण के प्रतीक
146	**नट शैल**	सार रूप (सारांश)
147	**नब्ज देखना**	जांच करना, सूक्ष्म चेकिंग करनी
148	**नम्बरवार**	कोई होशियार कोई बुद्धू/क्रमोत्तर गिरती हुई स्थिति में होना।
149	**नष्टोमोहा**	पुरानी दुनिया से मोह ममत्व का त्याग, निर्मोही स्थिति
150	**नामाचार**	प्रसिद्ध/लोक विश्रुत
151	**नामी-ग्रामी**	प्रसिद्ध करने वाला
152	**निधनके**	जिसके माँ-बाप न हो
153	**निराकार सो साकार**	साकार मे कर्म करते हुए अपने निराकार स्वरूप (stage) की स्मृति/याद में रहना
154	**निर्माण चित्त**	जिसका मन निर्मल/साफ हो/निर्माण करने का जिसमें हृदय हो
155	**निर्लेप**	जिस पर विकारों का लेप ना लगा हो/निर्विकारी स्थिति स्टेज
156	**निर्लेप**	कर्म बन्धन से मुक्त
157	**निर्वाणधाम**	आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान/ब्रह्मलोक, मूलवतन भी कहते हैं
158	**निर्विकारी**	विकार (बुराइयों) रहित (रजो, तमो से सम्बन्धित)
159	**निवृत्ति मार्ग**	सांसारिक विषयों का किया जानेवाला त्याग, प्रवित्ति का अभाव होना, सांसारिक कार्यों के लगाव से परे
160	**नूँथ होना**	माला में पिरोया हुआ
161	**नूँध**	पहले से लिखा हुआ
162	**नेष्टा**	एक जगह शान्ति में बैठकर योग का अभ्यास कराना। वैसे नेष्ठा एक प्रकार की योग की अत्यन्त कठिन क्रिया है। नेष्ठ नेत्र और देहातीत बनाने वाली शक्तिशाली दृष्टि है।

163	**नैन चैन**	आंख की हलचल व व्यवहार द्वारा
164	**नौंधा (नवधा भक्ति)**	भक्तिमार्ग में भक्त ईश्वर का साक्षात्कार के लिये नौ प्रकार की भक्ति श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, संख्य, दास्य और
165	**न्यारा और प्यारा**	सबसे न्यारा/अलग होते हुए भी सबका प्यारा होना
166	**पक्का महावीर**	विजयी, सफल, दृढ़, सफलतामूर्त
167	**पत्थरनाथ**	माया/विकारों के वशीभूत
168	**पत्थरपुरी**	कलियुगी/दिलोदिमाग पत्थर सदृश (पत्थर पूजे हरि मिले, तो.....)
169	**पथ प्रदर्शक**	पैगम्बर/रास्ता दिखाने वाला/गाइड
170	**पदमापदम, पदमगुणा**	व गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील) जो इस प्रकार लिखा जाता हैं—१००,००,००,००,००,००,००० **(१ नील - सौ अरब।)** संगम पर किया हुआ पुराषार्थ पदमापदम/पदमगुणा फलदाई होता है।
171	**पद्मपति जज**	अखुट सम्पत्ति (ज्ञान/योग/धन) का स्वामी
172	**परमधाम**	आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
173	**परिस्तान**	फरिश्तों की दुनिया/सतयुगी दुनिया
174	**पवित्रता**	मन-वचन-कर्म से पावन, निश्छलता, स्वछता, चतुराई रहित, सरल, साफ, शुभ वृत्ति, शुभ विचार कामना या इच्छा रहित, निस्वार्थ
175	**पसारा**	विस्तार से
176	**पाण्डव**	जिनको ईश्वरीय नियम वा मर्यादाओं पर सम्पुर्ण निश्चय है और ईश्वरीय पार्ट को पहचान कर ईश्वरिय ज्ञान को जीवन मे धारण करते है वही सच्चे पांडव कहलाते है, परमात्मा भी इनके साथी बनते हैं।
177	**पारलौकिक**	इस साकारी लोक या दुनिया से पार/बहुत दूर/सूक्ष्मलोक से भी ऊपर/दुनियावी रिश्तों से परे
178	**पारसनाथ**	परमात्मा/पारस सदृश बनाने वाला
179	**पारसपुरी**	स्वर्ग/सतयुग दिलोदिमाग जहाँ पारस पत्थर जैसा हो
180	**पित्र खिलाना**	परम्परा से चली आ रही भारतीय रस्म जिसमें लोग मृत व्यक्ति की आत्मा को ब्राहमणों के शरीर में आहवान कर पितरों की इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास किया जाता है ।
181	**पुरूषार्थ**	कर्म, वह मुख्य उद्देश्य या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना आवश्यक और कर्त्तव्य हो।

182	**पैगाम**	सन्देश
183	**पोतामेल**	हिसाब-किताब, रोजनिशी
184	**पोतामेल**	आत्मा जो मन वाणी कर्म द्वारा कार्य करे उसके रोज का हिसाब-किताब
185	**प्रकृति**	स्वभाव, तासीर, कुदरत।
186	**प्रजापिता**	सभी आत्माओं के पिता
187	**प्रवृत्ति**	झुकाव, संसार के कार्यों से लगाव, भौतिक जीवन के क्रियाकलापों (activity) में आसक्ति, मुरली के सन्दर्भ में गृहस्थ व्यवहार में रहकर श्रीमत की युक्ति (तरकीब) से निर्विकारी बनकर परमात्मा से योगयुक्त होना।
188	**प्रवृत्ति मार्ग**	संसार के कामों में लगाव, दुनिया के धंधे में लीन होना, भौतिक जीवन के कार्यव्यापारों में आसक्ति, जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमें मनुष्य सांसारिक कार्यों और बंधनों में पड़ा रहकर दिन बिताता है।
189	**प्रारब्ध/प्रालब्ध**	तीन प्रकार के कर्मो में से वह जिसका फलभोग आरंभ हो चुका हो। भाग्य, किस्मत, जैसे-जो प्रारब्ध में होगा वही मिलेगा।
190	**प्लानिंग बुद्धि**	लक्ष्य पर सोचती बुद्धि
191	**प्लेन बुद्धि**	साफ बुद्धि
192	**फखुर/फक्र**	नशा/गर्व
193	**फ़ज़ीलत**	मैनर्स, सभ्यता, श्रेष्ठता
194	**फथकाती**	तड़पाती, परेशान करती है
195	**फरमान बरदार**	आज्ञाकारी होना
196	**फराक दिल**	रहमदिल/साफ-शुद्ध चित वाला
197	**फराखदिल**	बड़ा दिल
198	**फानन**	अचानक/तुरन्त
199	**फारगति देना**	छोड़ के जाना/भाग जाना/तलाक देना
200	**फिकरात**	चिंता, सोच, खटका, ध्यान देने योग्य
201	**फुरना**	निकलना, प्रकट होना, चमक उठना
202	**फुरी फुरी अलाव भरता**	बूंद-बूंद से तालाब भरता है।
203	**फौरन**	तुरन्त, फटाफट
204	**बख्तावर**	भाग्यवान, खुशनसीब।

205	**बचड़ेवाल**	पालन करनेवाला, सम्भाल या देखभाल करने वाला।
206	**बनियन ट्री/बनेन ट्री**	प्राचीन वटवृक्ष जिसकी जड़ का पता नहीं (कोलकाता के बोटेनिक गार्डन में है), आदि सनातन देवी देवता धर्म के संस्थापक परमपिता परमात्मा शिव दोनों लोप हो जाते है।
207	**बलिहार जाना**	न्यौछावर/समर्पित/कुर्बान कर देना
208	**बल्लभ**	पृथ्वी के राजा के अर्थ में/इसका एक अर्थ प्रिय भी/ दुनियावी रिश्तों से पार
209	**बहिश्त**	स्वर्ग/सतयुग त्रेतायुग
210	**बांधेलियां**	बन्धन युक्त आत्मायें,वो आतमाएं जो परिवार के बन्धन में रहते बाबा मिलन नहीं कर सकती परन्तु बाबा को बहुत प्रेम से याद करती हैं
211	**बादशाही**	सतयुग की आठ गर्दिश, अष्टरत्न
212	**बाहर्यामी**	बाहरी/दुनियादारी का अनुभवी
213	**बाला**	प्रसिद्ध करना
214	**बीज**	जैसे एक वृक्ष का मूल उसका बीज होता है अर्थात बीज में ही वृक्ष का जीवन होता है उसका विस्तार होता है, ठीक इसी प्रकार परमात्मा भी इस सृष्टि रूपी वृक्ष के चैतन्य बीज हैं जो अपनी शक्तियों के बल से पतित सृष्टि को पावन बना कर उसमें नव जीवन का संचार करते है।
215	**बृहस्पति की दशा**	श्रीमत का पालन करते हुए ज्ञान योग की पढ़ाई पर पूरा ध्यान देते रहनेवाले। जिसकी वजह से माया वार नहीं कर पाती तो वे सदा सुखी रहते।
216	**बेअन्त**	अनादि/अन्तहीन/जिसका अन्त न हो
217	**बेगर**	अकिंचन/भिक्षुक/दरिद्र
218	**बेगर**	भिक्षुक/ दरिद्र
219	**बेगर टू प्रिन्स**	विकारों के कारण भिखारी बनी हुई आत्माओं को ज्ञान व योग द्वारा शिव बाबा राजकुमार अर्थात् धनवान, राज्य-अधिकारी बनाते हैं।
220	**बेहद**	इस मायावी/ सांसारिक दुनिया के हद/सीमा से पार/असीम
221	**बेहद का बाप**	प्रजापिता/ बापदादा/ सीमा से परे हो
222	**बेहद का बाप**	पारलौकिक पिता, शिव परमात्मा
223	**बैकुण्ठनाथ**	स्वर्ग (सतयुग-त्रेतायुग) के मालिक/राजा

224	**ब्रह्मचारी**	ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों को ब्रह्मचारी कहते हैं। ब्रह्मचर्य दो शब्दो **ब्रह्म** और **चर्य** से बना है। ब्रह्म का अर्थ परमधाम, चर्य का अर्थ विचरना, अर्थात परमधाम मे विचरना, सदा उसी का ध्यान करना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है। वास्तव में ब्रह्मचर्य काम विकार से सम्पूर्ण मुक्ति। पवित्रता का आधार स्तंभ है ब्रह्मचर्य।
225	**ब्रह्मज्ञानी**	ब्रह्म-तत्व को जाननेवाला
226	**भंडारा**	खाने-पीने की वस्तुओं का संग्रह स्थल
227	**भंभोर**	गोल दुनिया
228	**भगवानुवाच**	शिव परमात्मा के महावाक्य/विशेषतः मुरली पूरी तरह भगवानुवाच ही है
229	**भट्ठी**	जिसमें तपकर सोने में निखार आये/आबू जैसी पावन तपस्याभूमि में जाकर वरिष्ठों की क्लास आदि का श्रवण-चिन्तन-मनन से ब्राह्मणत्व में सुधार लाना
230	**भस्मासुर**	एक असुर जो किसी को या स्वयं को भी भस्म कर सकता है
231	**भागंती**	सब कुछ सुनकर फिर छोड़ने वाला
232	**भागीरथी**	भाग्यशाली रथ ब्रह्मा का/भगीरथ की तपस्या के समान भारी/बहुत बड़ा।
233	**भासना आना**	अनुभव होना
234	**भ्रमरी मिसल**	भ्रमरी की तरह दीपक में भूं भूं करना
235	**मंथन**	मथना, खूब डूब-डूबकर तत्वों का पता लगाना।
236	**मंथन**	खूब डूब डूब कर विचारकर तथ्यों का पता लगाना।
237	**मच्छरों सदृश वापस जाना**	अन्त समय एक साथ अनेक आत्माएं मच्छरों के समान परमधाम जायेंगी।
238	**मत-पंथ**	गुरूओं के बताये मत व उनके द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलना
239	**मदार**	आधार, धुरी, दायरा
240	**मदार**	धुरी, आधार
241	**मध्याजी भव**	स्वर्ग के सम्पूर्ण रूप, विष्णु का स्वरूप को याद करो।
242	**मनमनाभव**	स्वयं को आत्मा समझ एक बाप परमपिता शिव को याद करना
243	**मनसा**	मन की शक्ति से/मनसा सेवा
244	**मनोनुकूल**	इच्छानुसार
245	**मन्मत्/मनमत्**	स्वयं के तर्क/विवेक बुद्धि पर आधारित विचार

246	**ममत्व रखना**	मोहमाया/अपनेपन के भाव में रहना
247	**मर्तबा**	पद/पोजीशन
248	**मलेच्छ**	पापी/भ्रष्टाचारी
249	**महतत्व**	वह स्थान जहां आत्मा व परमात्मा का निवास है/ब्रह्मलोक
250	**माटेले**	जो माँ को पसन्द हो/सगा, जो सौतेला न हो
251	**मामेकम्**	सिर्फ मुझ एक बाप परमपिता परमात्मा शिव को याद करो
252	**माया**	5 विकार (काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार) बाबा के ज्ञान से परे इसका अर्थ धन सम्पत्ति के अर्थ में रूढ़ था।
253	**माया**	काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी पांच विकार/भक्ति मार्ग में धन-संपत्ति
254	**मायाजीत जगतजीत**	माया पर विजय पाने वाले को जगत की बादशाही मिलेगी
255	**माशूक**	परमात्मा प्रियतम
256	**माशूक**	वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, प्रियतम, परमात्मा
257	**मासी का घर**	जहां आसानी से आया जाया जा सके
258	**मास्टर ज्ञान सूर्य**	ज्ञान-सूर्य (शिव बाबा) का शिष्य/ बेटा/स्वरूप
259	**मिडगेट**	छोटा बच्चा, ज्ञान में कम समय से हो, उसे मिडगेट कहते है।
260	**मिस न करना**	कभी न छोड़ना
261	**मिसाल**	नमूना, उदाहरण, तुलना
262	**मिसाल-राज्य**	राज्य का नमूना/उदाहरण
263	**मुंझना**	समझ में न आना
264	**मुआफिक**	ठीक ठीक, न ज्यादा न कम, मनोनुकूल, इच्छानुसार
265	**मुक्तिदाता**	सर्वदुःखों से मुक्ति/आजादी दिलानेवाले, शिव बाबा
266	**मुख वंशावली**	ब्रह्मा मुख से जन्म (अलौकिक)
267	**मुजीब**	स्वीकार करने वाला, जवाब देने वाला।
268	**मुरब्बी बच्चा**	आज्ञाकारी/पसंदीदा/समान
269	**मुरादी**	मृत्यु, पोतामेल, अभिलाषी
270	**मुरीद**	जो किसी का अनुकरण करता या उसके आज्ञानुसार चलता हो/ अनुगामी/अनुयायी/शिष्य
271	**मुलम्मे**	कमतर/निम्न बर्तन की गन्दगी करने से संबंधित
272	**मूलवतन**	परमधाम/सर्व आत्माओं का मूल घर/आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
273	**मूसल**	मिसाइल्स/अणुबम/प्रक्षेपकास्त्र जैसे अन्य विध्वंशकारी अस्त्र-शस्त्र

274	**मूसलाधार**	लगातार/बिना रूके (संकर शब्द)
275	**मृगतृष्णा/मरीचिका**	जो दिखाई तो देता हो पर वास्तव में होता ही नहीं (कभी कभी मैदानों में भी कड़ी धूप पड़ने के समय जल या जल की लहरों की मिथ्या प्रतीति होती है जिसे मृग जल समझकर तृष्णा बुझाने के लिये भटकता है)
276	**मेहर करना**	मेहरबानी, कृपा, अनुग्रह, दया
277	**मैं पन**	देह अभिमान
278	**मोचरखाना**	मार/सजाये खाना
279	**मोचरा**	सजायें
280	**मोहताज**	मोह के ताजधारी/माया के वशीभूत
281	**मौलाना मस्ती**	भगवान की याद में मस्त
282	**म्लेच्छ बुद्धि**	विकारी बुद्धि
283	**यादव**	जिन्होंने खुद के कुल का विनाश स्वयं (बॉम्ब, मिसाईल) बनाकर करगें। युरोप आदि पश्चिम देश विज्ञान की शक्ति द्वारा परमाणु अस्त्र शस्त्रों द्वारा अपने ही मानव कुल का विनाश करेगें। विशेष मुरली से - शास्त्रों में दिखाते हैं- लड़ाई में यादव कौरव मारे गये। पाण्डव 5 थे। फिर हिमालय पर जाकर गल मरे। अर्थात 5% आत्माएँ तपस्या द्वारा शरीर के भान को समाप्त कर स्वर्ग अर्थात सतयुग में जाने की अधिकारी बनती हैं।
284	**युग**	सृष्टिचक्र का एक चतुर्थांश/1250 वर्ष
285	**युगल**	जोड़ा/दम्पत्ति/पति-पत्नी में से कोई एक भी
286	**रजोगुण**	राजसिक/उपरोक्त दो युगों से कम गुण विशेषकर द्वापर से जहां ईर्ष्या-द्वेष रूपी रज/धूल प्रारम्भ होती हैं।
287	**रडिया मारना**	चीखना-चिल्लाना
288	**रमता जोगी**	एक जगह जमकर न रहनेवाला। घूमता फिरता। जैसे-रमता जोगी, बहता पानी, इनका कहीं ठिकाना नहीं।
289	**रस**	प्राप्ति का सार/मजा/आनन्द
290	**रसम, रस्म**	परम्परा, रिवाज
291	**रसातल**	बुराई की अति

292	**राजयोग**	परमात्मा को याद करने की सर्वोच्च सहज विधि, जिसमें आंखें खोलकर अपने को आत्मा समझकर परमात्मा के ज्योति स्वरूप का ध्यान किया जाता है।
293	**राजाई**	बादशाही, (विशेषकर सतयुग व त्रेतायुग में राज्य प्राप्त करने के सन्दर्भ में)
294	**रायल घराना**	राजाई घराना/सतयुगी देवी देवता परिवार
295	**राहु की दशा**	श्रीमत का उल्लंघन कर ज्ञान योग की पढ़ाई में फेल होने वाले जसकी वजह से माया का वार होता रहता है जिसकी वजह से हमेशा दुखी रहते।
296	**रिंचक मात्र**	बहुत थोड़ा
297	**रूद्र-ज्ञान यज्ञ**	शिवबाबा ने स्वयं ज्ञान देकर जिस यज्ञ की स्थापना की हो
298	**रूद्रमाला**	शिव की माला जिसमें 08,108,16108 की माला सम्मिलित है
299	**रूप बसंत कहानी का मर्म**	जब तुम बच्चे सतयुग में राजा बन जाओगे, तब तुम पुरानी याददाश्त जो अभी ईश्वरीय ज्ञान के रूप में है वह भूल जाओगे लेकिन तुम्हारे दैवी गुण संस्कारो में इमर्ज रहेंगे।
300	**रूस्तम**	शूरवीर, माया से विजय पा रहे बच्चों को बाबा यह उपाधि/टाइटिल देता है।
301	**रूहरिहान**	आत्मा की आत्मा से/आत्मा की परमात्मा के साथ बातचीत
302	**रूहानियत**	आत्मिक स्थिति/स्वभाव में स्थिर रहना
303	**रूहानी लीला**	आत्माओं की लीला
304	**रैजगारी**	छोटे सिक्के
305	**रौरव नरक**	नरक की अति/पुराणों में एक भीषण नरक का नाम जो २१ नरकों में से पाँचवाँ कहा गया है।
306	**लकब**	उपाधि/ खिताब/ पदवी
307	**लड़ाई वालों का**	कोई सैनिक का उदाहरण
308	**लवलीन**	प्यार में मस्त
309	**लेप-छेप**	कर्मों का खाता
310	**लोन लेकर**	किराये पर
311	**लौकिक**	दुनियावी/सांसारिक रिश्ते/सम्बन्ध
312	**वरसी**	किसी के मरने के बाद हर वर्ष पड़ने वाली तिथि/ मृत का वार्षिक श्राद्ध
313	**वर्सा**	शिवबाबा से मिलने वाले ज्ञानयोग के बल से सतयुग में प्राप्त होने वाली राजाई अर्थात् राज्याधिकार/परमात्मा/बड़ो से सम्पत्ति का स्वतः बच्चों/ छोटों को मिलना

314	**वानप्रस्थ अवस्था**	शास्त्रों में गृहस्थ अवस्था के बाद की अवस्था जिसमें पति पत्नी घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारी पुत्रों को देकर वन में साथ साथ चले जाते हैं। वहां पवित्र रह कर तपस्या करते हैं। शिव बाबा ब्रह्मा तन का आधार वानप्रस्थ अवस्था में लेते हैं- बाबा के ज्ञान में आने वाला व पवित्रता की धारणा करने से चाहे किसी भी उम्र का हो उसकी वानप्रस्थ अवस्था शुरू हो जाती है।
315	**वाममार्ग**	जब से देवताओं ने विकर्म करना शुरू किया तब से वाममार्ग शुरू हुआ
316	**वारिस**	वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी और उसके ऋण आदि का देनदार हो, उत्तराधिकारी जैसे बेटा अपने पिता की संपत्ति का वारिस होता है।
317	**विकर्म**	जिस कर्म से भविष्य में दुःख का खाता बढ़े
318	**विकर्माजीत**	काम, क्रोध आदि विकर्मों से दूर/शून्य
319	**विचार सागर मंथन**	अच्छी रीति सोचना समझना
320	**विचार सागर मंथन**	ज्ञान का गहराई से मनन -चिन्तन करना, ज्ञान के सारतत्व का मथकर पता लगाना
321	**विदेही**	बिना देह के शरीर से बिल्कुल अलग, शरीर से न्यारा
322	**विदेही बाप**	अशरीरी बाप/शिव परमात्मा
323	**विनाश काले प्रीतबुद्धि**	पांडव
324	**विनाश काले विपरीत बुद्धि**	अन्त समय दुर्बुद्धि का आना/ अन्त समय भगवान को भूलना/कौरव
325	**विष्णुपुरी**	विष्णु का निवास स्थान (सूक्ष्मलोक)
326	**वृक्षपति**	शिवबाबा, सृष्टि रूपी कल्पवृक्ष का बीज (मूल) परमात्मा होने के कारण उसे वृक्षपति कहा जाता है
327	**वैजयन्ती**	पताका, झण्डा, विजयमाला, ज्ञान में अष्टरत्न आत्माओं की माला।
328	**वैतरणी नदी**	एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर मानी जाती है। यह नदी बहुत तेज बहती है, इसका जल बहूत ही गरम और बदबूदार है और उसमें हड्डियाँ, लहु और बाल आदि भरे हुए है। यह भी माना जाना है कि प्राणी को मरने पर पहले यह नदी पार करनी पड़ती, जिसमें उसे बहुत कष्ट होता है। परंतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था में गोदान किया हो, तो वह आसानी से इस नदी के पार उतर जाता है।

329	**वैराग्य**	जब मन संसार के आकर्षणों से हट जाता है। संसार की विषयवासना तुच्छ प्रतीत होती है और लोग संसार की झंझटे छोड़कर एकान्त में रहते और ईश्वर का भजन करते हैं।
330	**व्यक्त ब्राह्मण**	शरीरधारी ब्रह्मा और ब्राह्मण
331	**व्यर्थ**	जो फायदेमंद नहीं हो/अनावश्यक
332	**शंख ध्वनि**	ज्ञान सुनाना
333	**शक्ति फर्स्ट**	माताओं को आगे रखना
334	**शफा पाना**	फायदा/भला होना
335	**शमा**	अग्नि/शिव बाबा को शमा कहा है और हम आत्माएं 'शमा' पर फिदा 'परवाने'
336	**शांतिधाम**	आत्मा-परमात्मा का निवास स्थान
337	**शान्ति का घमंड**	शान्ति/साइलेन्स की शक्ति
338	**शास्त्रमत**	वेद, पुराण, उपनिषद आदि शास्त्रों पर आधारित मत
339	**शिरोमणि**	सर्वश्रेष्ठ/मुख्य/चोटी
340	**शिरोमणि**	सर्वश्रेष्ठ, भक्तों में नारद और मीरा को भक्तशिरोमणि व ज्ञान में सरस्वती को शिरोमणि कहा गया है।
341	**शिवपुरी**	शिव परमात्मा का निवास स्थान (परमधाम में सबसे ऊपर)
342	**शिवोहम्**	मै ही शिव हूं
343	**शुरूड़**	तीक्ष्ण बुद्धि/प्रखर
344	**शूबीरस**	स्वर्ग का एक पेय/अमृत
345	**शैल**	माना सारांश.... यानी शार्ट /सार रूप
346	**शो करना**	प्रदर्शन करना/ नाम बढ़ाना
347	**शो करना/बाजी**	दिखावा/नाम मान शान के पीछे चलना/प्रसिद्धि के लिए प्रयासरत (संकर/मिश्रित शब्द)
348	**श्रीमत**	शिव परमात्मा के द्वारा उच्चारित मत/विचार
349	**संकल्प**	विचार, किसी विषय में विचारपूर्वक किया हुआ दृढ़ निश्चय (रिज़ोल्यूशन), कार्य
350	**सचखण्ड**	सतयुग
351	**सचखण्ड**	स्वर्ग/सतयुग
352	**सतोगुण**	अच्छे गुणधारी, विशेष रूप से सतयुग फिर 14 कला सम्पन्न त्रेतायुग तक की यह स्थिति।

353	**सत्कर्म**	वह पुरुषार्थी कर्म जो भविष्य/आगे के लिये सुरक्षित हो
354	**सत्यं शिवम् सुन्दरम्**	जो अविनाशी, चिरंतन और शाश्वत है वही सत्य है। सुंदरता का तात्पर्य किसी दैहिक या प्राकृतिक सौंदर्य से नहीं है। वह तो क्षणभंगुर है। सुंदरता वास्तव में पवित्र मन, कल्याणकारी आचार और सुखमय व्यवहार है। इस सुंदरता का चिरंतन स्रोत शिव ही है। शिव शब्द का अर्थ है कल्याणकारी। जो कल्याणकारी है, वही सुंदर है और जो सुंदर है वही सत्य है। इस प्रकार सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्, जैसे मंत्र का बीज शिव ही है अर्थात इस सृष्टि की कल्याणकारी शक्ति।
355	**सदृश**	समान
356	**सब स्टेशन**	शान्ति प्राप्त कर आगे भेजने वाला
357	**सब्ज**	ताजे हरे भरे फल फूल
358	**समजानी**	समझाना, राय देना, समझदारी/समझ
359	**समर्थ**	फायदेमंद/सम्पन्न
360	**समर्थी**	सम्पन्नता
361	**सम्पूर्ण ब्रम्हा**	सूक्ष्म शरीरधारी वतनवासी ब्रह्मा/साकार में कर्मातीत ब्रह्मा
362	**सम्पूर्ण सरस्वती**	सूक्ष्म शरीरधारी/वतनवासी सरस्वती
363	**सर्वोदय लीडर**	सब पर दया करने वाला
364	**साकारपुरी**	मनुष्यलोक (जिसमें सभी ग्रह-नक्षत्र और जीवधारी, जड़-चेतन आते हैं)
365	**साकारी सो अलंकारी**	देवता (शरीर में रहते सर्वगुण धारी)
366	**साक्षी होना**	घटना को देखनेवाला, मन के विचारों के दृष्टा को साक्षी कहते है। जब हम निर्विचारक बन अपने विचार को देखते हैं तब हम साक्षी होते हैं, जब हम सिर्फ विचार करते है तब हम मन या विचारक होते है। शब्द रहित आत्म बोध, मैं हूँ, के बोध को साक्षी कहते हैं। (a) उदाहरण के लिए जब आप एक फूल अथवा किसी दृश्य को निर्विचार होकर देखते है तब आप साक्षी है। (b) अथवा जब आप किसी फूल या दृश्य को देखते है तब आपके अंदर उस फूल के बारे में मन में प्रतिक्रिया उठती है की यह गुलाब (c) का फूल है, तब आप उस प्रतिक्रिया, विचार को भी देखे तो यह हुआ साक्षी।

367	**सालिग्राम**	आत्माएं/जल के बहाव से नदी-समुद्र में सबसे चिकना सुन्दर पत्थर जो हिन्दू धर्म में पूज्य
368	**सालिग्राम**	शिव लिंग के साथ जो छोटे छोटे शिवलिंग आकर के पत्थर होते हैं। जो हम
369	**सिजरा**	फूलों का गुलदस्ता
370	**सितम**	अनर्थ/ आफत/जल्म/अत्याचार
371	**सिरताज**	बाबा के सिर के ताज/आज्ञाकारी
372	**सीरत**	स्वभाव, आदत
373	**सुखधाम**	स्वर्ग/सतयुग
374	**सुबह का साई**	जो सुबह मिलता हो अर्थात् ईश्वर/शिव बाबा
375	**सूक्ष्म**	बहुत छोटा, पतला या बारीक,जो अपनी बारीकी के कारण सबके ध्यान या समझ में जल्दी न आ सके।
376	**सूक्ष्म-वतन/लोक**	स्थूल या साकारी लोक और मूलवतन या परमधाम के बीच का वह स्थान जहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ फरिश्तों की दुनिया है।
377	**सूर्यवंशी**	सतयुगी देवी देवता
378	**सोमरस**	देवताओं का अमृत
379	**सौगात**	वह वस्तु जो इष्ट जनों को देने के लिये लाई जाय, भेंट, उपहार, तोहफा।
380	**स्थूल**	बड़े आकार का, जो सूक्ष्म न हो अर्थात् जो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्पष्ट दिखाई या समझ में आने योग्य
381	**स्वचिन्तन**	स्वयं का आध्यात्मिक मनन- चिन्तन/आत्मा की समझ
382	**स्वदर्शन चक्र**	अपने सारे चक्र के 84 जन्म के पार्ट को जानने/देखने वाले कैसे एक देह छोड़ दूसरा देह लेते हैं। कभी स्त्री का तो कभी पुरुष का.... कभी उत्तर में तो कभी दक्षिण में.... अपने 84 जन्मों की माला को देखें.... हम सब इस चक्र के अंदर हीरो पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मायें हैं। स्वदर्शन चक्रधारी अर्थात मास्टर नोलेजफूल।
383	**स्वदर्शन चक्रधारी**	स्वयं को आत्मा समझते हुए सृष्टि चक्र और 84 जन्मों को स्मृति/याद में रहना
384	**स्वमान**	स्वयं ही स्वयं को सम्मान देना

385	**हठयोग**	हठ करके योग लगा जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है। विशेष—नेती, धौती आदि क्रियाएँ इसी योग के अंतर्गत हैं।शरीर के भीतर कुंडलिनी, अनेक प्रकार के चक्र तथा मणिपूर आदि स्थान माने गए हैं। मत्स्येंद्रनाथ और गोरखनाथ इस योग के मुख्य आचार्य हो गए है।
386	**हथेली पर बहिश्त**	हथेली पर/हाथ में स्वर्ग की बादशाही
387	**हद का पेपर**	स्वयं या ब्राह्मण परिवार द्वारा पेपर
388	**हद का बाप**	लौकिक पिता
389	**हप**	कोई वस्तु मुँह में चट से लेकर होंठ बंद करना जैसे—हप से खा गया।
390	**हम सो, सो हम**	भक्ति मार्ग में आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा। पर ज्ञान मार्ग में शिव बाबा ने समझाया यह अर्थ बिल्कुल गलत है। हम सो का सही अर्थ है हम देवता, क्षत्रिय, वैश्य सो शूद्र। अभी हम सो ब्राहमण बने हैं सो फिर से देवता बनने के लिये।
391	**हमजिन्स**	बन्धु, मित्र
392	**हाज़िर**	संमुख, उपस्थित, सामने आया हुआ, मौजूद, विद्यमान।
393	**हुजूर, हजूर**	बहुत बड़े लोगों के प्रति संबोधन का शब्द, मुरली में शिव परमात्मा के लिये सम्बोधन
394	**हुज्जत**	व्यर्थ का तर्क, फजूल की दलील, तकरार, कहासुनी।
395	**हुण्डी**	इसके द्वार लेनदेन का व्यवहार
396	**होवनहार**	सम्भावित/भविष्य में होने वाला
397		
398		
399		
400		

मुरली में आने वाले मुहावरों और कहावतों का अर्थ व्याख्या सहित*		
क्रम सं.	मुहावरे/कहावत	अर्थ
1	**अक्षर देना**	ज्ञान देना/वचन देना
2	**अति खूने नाहक**	क्रूरता करना
3	**अन्त काल जो स्त्री सुमिरे, वल वल मनुष्य जन्म में अवतरे।**	जिसकी दूसरी पंक्ति है अन्त काल जो शिवबाबा को सुमरे नारायण जूं वल वल अवतरे। तात्पर्य है कि सिवाय भगवान के याद किया तो हमेशा मनुष्य जन्म में ही अवतरित होना पड़ेगा। यदि संगमयुग के अन्त में शिवबाबा की याद आती रही तो दैवी घराने में जायेंगे।
4	**अन्तमति सो गति**	अन्त समय के संकल्पों (अवचेतन मन चल रहा होगा) के अनुसार अगला जन्म
5	**अपनी घोट तो नशा चढ़े**	अपनी बुद्धि से मनन-चिन्तन जितना करेंगे, उतना नशा चढ़ेगा।
6	**आंटे में लून**	ज़रा सा/बहुत आटें में थोड़ा सा नमक
7	**आप मुएं मर गई दुनिया**	दुनिया से किनारा करने से किसी की याद नहीं आयेगी
8	**इच्छा मात्रम अविद्या**	इच्छा के बारे में सम्पुणे - अज्ञान इच्छाएं मृगतृष्णा के समान है जिसके पिछे भागने से और ही दूर चलती चली जाती है और हमें असंतुष्ट करते रहती है। इस संबध में बाबा हमें बहुत अच्छी युक्ति बताते है कि जब हमें इच्छाओं के बारे में कुछ ज्ञान ही नहीं रहता तब मन कि ऊंची स्थिति द्वारा हमारी हर मनोकामना स्वतःपूर्ण हो जाती है। यह युक्ति है सदा संतुष्ट और तृप्त रहने कि।
9	**एक बाप दूसरा न कोई**	लौकिक व्यवहार में रहते हुए बुद्धि में परमात्मा के सिवा कोई दूसरा न याद आये।

10	**कख का चोर सो लख का चोर**	चोरी चोरी है, चाहे राई (पैसे) की हो चाहे पर्वत समान लाखों की हो।
11	**कट निकालना**	कमी-कमजोरी निकालना
12	**खग्गियां मारना/कन्धे उछालना**	आनंद और ख़ुशी में मानो भांगड़ा नृत्य करना
13	**गले का हार बनना**	अत्यंत प्रिय होना/शोभा बढ़ाना
14	**गुड़ियों की पूजा**	भक्ति मार्ग में मिट्टि के पुतले बना कर मूर्तियों की पूजा करना।
15	**गुल गुल बनना**	फूल जैसा सुन्दर बनना
16	**घट में ही ब्रह्मा, घट में ही विष्णु, घट में ही नौ लख तारे**	एक सेकण्ड में शिव बाबा ब्रह्मा बाबा के तन में आकर ज्ञान देते और ब्रह्मा से विष्णु और नौ लाख प्रजा तैयार हो जाती।
17	**घमासान होना**	लड़ाई/अफरातफरी का माहौल
18	**चढ़ती कला तेरे भाने सबका भला**	आपकी सद्गगति के साथ-साथ सर्व आत्माओं को गति अर्थात् मुक्ति मिल जाती है। आपकी चढती कला मे सर्व का भला होता है।
19	**चढ़े तो चाखे बैकुंठ रस**	पुरूषार्थ से स्वर्ग की बादशाही मिलना
20	**चढ़े तो चाखे वैकुंठ रस, गिरे तो चकना चूर**	ज्ञान मार्ग मे कदम कदम पर संभाल कर चलना पड़ता है। हर कदम पर राय लेनी पड़ती है। जो ज्ञान मार्ग की सीढ़ी पर निरंतर आगे चढ़ते रहते है वे वैकुंठ रस चखने के अधिकारी बनते है लेकिन अगर माया के वश होकर नीचे गिर जाते है तो अधोगती को प्राप्त करते है।
21	**चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय**	किसी भी बात की चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि जो होना है वही हो रहा।
22	**चुल पे सो दिल पे**	जो साथ रहे हैं, वही दिल पर रहते हैं।

23	**छी-छी दुनिया**	नर्क/पुरानी कलियुगी दुनिया
24	**जिन सोया तिन खोया**	जो अमृतवेले सो जाते हैं, वे सर्व प्राप्तियों को खो देते हैं।
25	**जो ओटे सो अर्जुन**	जो अपने आप आकर सेवा की जिम्मेदारी उठाता है, वही अर्जुन (नम्बरवार) में आता है।
26	**झूठी माया झूठी काया झूठा सब संसार**	सत्य एक परमात्मा और बाकी सब कुछ झूठ
27	**टट्टू को टारा काजी को इशारा**	समझदार केवल इशारे से समझ जाता है जबकि मूर्ख चाबुक/दण्ड से ही समझता है।
28	**ठौर न पाना**	ठिकाना/सहारा न मिलना
29	**डिब्बी में ठीकरी**	डिब्बा खोला तो मिट्टी मिली
30	**तकदीर को लकीर लगाना**	माया वाला अलबेलापन में आकर भाग्य (ज्ञानयोग) कम बटोरना/मिलना
31	**तीन पैर पृथ्वी**	यह लोक कथा पर आधारित है, वामन की कथा है कि राजा बलि से तीन पैर के बदले विष्णु ने पूरी पृथ्वी ले ली थी। पर बाबा कहते है कि तुम श्रीमत पर चलकर के तीन पैर अर्थात थोड़ा सा नहीं बल्कि सतयुग में चलकर सम्पूर्ण राज्यभाग पाओगे।
32	**तीन पैर पृथ्वी के**	थोड़ी सी जगह
33	**तुरन्त दान महाकल्यान**	दान देने का संकल्प आते ही दान कर देना, क्योंकि इसमें महापुण्य का फल समाया हुआ है।
34	**दिवा जलाना**	याद करना
35	धन्ने सब में धूर, बिगर धन्धे नर से नारायण बनने के	सब धन्धे में वही धन्धा सर्वश्रेष्ठ है जो नर से नारायण बना दे। बाकी किसी धन्धे से अविनाशी धन की प्राप्ति हो नहीं सकती।
36	**नशा चढ़ना**	खुश होना
37	**पान का बीड़ा उठाना**	जिम्मेदारी उठाना, हिम्मत करना
38	**पायी-पैसे की तकदीर**	भाग्य में सिर्फ थोड़ा लिखा हो

39	**पुखराज परी कहानी का मर्म**	इन्द्रलोक में एक बार एक परी मृत्युलोक से पतित मनुष्य को ले गयी, तो उसे सजा के तौर पर नीचे मृत्युलोक कुछ समय रहने के लिये भेज दिया गया। उसी प्रकार जब तक कोई मनुष्य ज्ञान सुनकर पवित्रता को धारण न कर लें तब तक उसे इन्द्रप्रस्थ रूपी मधुबन भूमि में बाबा से मिलने के लिये नहीं आमंत्रित करना चाहिए अन्यथा निमित्त आत्मा को नीचे उतरना अर्थात हिसाब-किताब बनता है।
40	**बच्चू बादशाह पीरू वजीर**	काम विकार अगर विकारों का राजा है, तो क्रोध उसका वजीर है।
41	**बम-बम भोले भर दे झोली**	हे! परमात्मा हमारी बुद्धि रूपी झोली ज्ञान रत्नों से भर दो।
42	**बुद्धि का ताला खोलना**	याद दिलाना/ज्ञान का तीसरा नेत्र खुलना।
43	**बुद्धि योग तोड़ना**	परमात्म याद से विमुख होना
44	**बेड़ा डूबना**	विषय-विकार रूपी सागर में डूबना।
45	**भरी ढोना**	दास दासी नौकर-चाकर बन कर सेवा करना...... इस समय जिन्हें शास्त्रों का ज्ञान है जो अपने आपको शास्त्रों का ज्ञाता मानकर बहुत बुद्धिवान समझते हैं बाद में ज्ञान में आयेंगे तो निश्चय बुद्धि ऊंच पद पाने वाली आत्माओं की सेवा करेंगे।
46	**मनुष्य से देवता किये, करत न लागी बार।(कबीर)**	भगवान को मनुष्य से देवता बनाने में तनिक भी देर नहीं लगती।
47	**माया-मच्छन्दर का खेल**	लुका-छिपी जैसा एक खेल जो माया भी खेलती/करती है।
48	**मिट्टी खाना**	व्यर्थ की बात करना
49	**मिठरा घुर त घुराय**	मीठा बनो तो सब आपसे मीठा व्यवहार करेंगे।

50	**मुख में मुहलरा डाल देना**	हातमताई की कहानी में मुहलरा का प्रयोग किया गया है। उसमें मुहलरा मुख में डालते थे तो माया गुम हो जाती थी। मुहलरा निकालने से माया आ जाती थी। तो शिव बाबा का ज्ञान और योग मुहलेरा के समान है। जब कोई परिस्थिति या संकट आता है तो बाबा कि याद और ज्ञान ही हमें माया से बचा सकता है।
51	**मुख-पानी होना**	मुंह में पानी आना/पसंद आना
52	**मूत-पलीती कप्पड़ धोये**	विकारों से मलिन मन रुपी कपड़ों को परमात्मा के याद रुपी साबुन से ही धोया जा सकता है।
53	**लंगर उठाना**	मोह त्यागना
54	**विषय वैतरणी नदी पार करना**	पौराणिक मान्यता के अनुसार इसका जल बहुत ही गरम और बदबूदार है और उसमें हड्डियाँ, लहू तथा बाल आदि भरे हुए हैं। यह भी माना जाता है कि प्राणी को मरने के बाद पहले यह नदी पार करनी पड़ती है, जिसमें उसे बहुत कष्ट होता है। परंतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था में गोदान किया हो, तो वह उसी गौ की सहायता से सहज में इस नदी के पार उतर जाता है। पापियों को यह नदी पार करने में बहुत कष्ट होता है। **मुरली में इसका रहस्य यही है कि बच्चों संगम युग में पुरुषार्थ करके ही तुम अन्त समय की सजाओं से बच सकते हो।**
55	**शेरनी का दूध सोने के बर्तन में ही ठहरता है।**	बाबा का श्रेष्ठ ज्ञान स्वच्छ मन वचन बुद्धि में ही धारण हो सकता है।
56	**सच तो बिठो नच**	जहां सच्चाई है, वहां मन खुशियों से नाचता रहता है।
57	**सच्चा सोना बनना**	सोने जैसे आकर्षित होने का सबसे कीमती होने का गुण धारण करना
58	**सच्चे दिल पर साहब राजी**	भगवान सच्चे हृदय वालों पर न्यौछावर होते हैं।
59	**सब्ज बाग दिखलाना**	अपना काम निकालने या फंसाने के लिये बड़ी बड़ी आशाएं दिलाना
60	**सर का मोर होना**	सर्वश्रेष्ठ होना/हृदय में बसना

61	**सरसों के माफिक**	सरसों के दाने जैसा/अनेकानेक
62	**सांप भी न मरे और लाठी भी न टूटे**	अपने कार्य में सफलता भी हासिल हो जाती और किसी को दुःख भी न मिले, ऐसी युक्ति से हर कर्म करना चाहिए।
63	**सुनंति-पशंति-औरों को सुनावंती-भागंती**	अच्छी अच्छी आत्मायें बाबा का ज्ञान सुनती हैं ओरों को सुनाती है और अंत में माया से हार कर ज्ञान से चली जाती हैं।
64	**हथ कार डे दिल यार डे**	हाथों से काम करते रहो, दिल से शिव बाबा को याद करते रहो अर्थात् कर्मयोगी बन जाओ।
65	**हाथ कर दे दिल यार दे**	हाथ से कर्म करते हुए मनमें एक बाप की याद रहना
66	**हिम्मते बच्चे मददे बाप**	जो बच्चे हिम्मत रख आगे बढ़ते हैं, उन्हें बाप की मदद जरूर मिलती है।
67	**हुक्मी हुक्म चला रहा**	जो कुछ भी होता है, भगवान की आज्ञा समझकर उसे मानकर चलना है।

हिंदी मुरली में आये अंग्रेजी शब्दों के अर्थ		
क्रम सं.	अंग्रेजी शब्द	अर्थ
1	**अंडरलाइन**	पक्का करना
2	**अटेंशन**	सावधानी
3	**अट्रैक्शन**	आकर्षण
4	**अडॉप्टेड**	गोद लेना
5	**अथॉरिटी**	शक्ति/प्रभाव शाली
6	**अथॉरिटी के बोल**	शक्तिशाली बोल
7	**अबाउट**	विषय में/बारे में, सार में, मोटे तौर पर
8	**अर्थ क्वेक Earth Quake**	भूकम्प
9	**अर्थक्वेक**	भूकंप
10	**अल्लफ़**	एक परमात्मा
11	**आयरन एज्ड**	कलियुगी
12	**आयरन ऐज**	कलियुग
13	**इन्कॉरपोरल**	निराकार
14	**इन्वर्टर बुद्धि**	अन्तर्मन में झांकती बुद्धि
15	**इन्वेंशन**	आविष्कार
16	**इन्वेंशन**	आविष्कार
17	**इन्शुरन्स कंपनी**	बीमा कंपनी
18	**इमर्ज**	प्रकट होना
19	**इम्मोर्टल**	अविनाशी
20	**उलाव (Allow)**	मानना, स्वीकार करना, आज्ञा देना
21	**एक्टिविटी**	कर्म शैली
22	**एक्टिविटी**	क्रिया-कला
23	**एक्यूरेट**	सटीक, सही

24	**एक्यूरेट**	अचूक, यथार्थ, शुद्ध
25	**एक्सचेंज**	अदला-बदली
26	**एजुकेशन डिपार्टमेंट**	शिक्षा विभाग
27	**एड्वेरटाइज़**	विज्ञापन, सुचना, घोषणा
28	**एम-ऑब्जेक्ट**	लक्ष्य अर्थात श्री लक्ष्मी नारायण का पद पाना
29	**एवर प्योर**	हमेशा तैयार
30	**एवर रेडी**	हमेशा तैयार
31	**एवर हेल्थी एवर वेल्थी**	तन और धन से सदा सुखी, सदा समृद्ध
32	**ऑक्यूपेशन**	व्यवसाय
33	**ऑक्यूपेशन**	व्यवसाय, कारोबार, धन्धाधोरी
34	**ऑटोमेटिकली**	स्वतः, आपेही, अपने आप
35	**ऑनेस्ट**	सच्चा सत्यपरक
36	**ऑलमाइटी अथॉरिटी**	सर्वशक्तिमान
37	**ओपन स्टेज**	सारी दुनिया के सामने
38	**ओरफन**	निधनके,जिसके माँ-बाप नहीं
39	**ओर्गंस**	अंग, उपांग
40	**कंप्लेंट, Complaint**	शिकायत
41	**कंबाइंड**	साथ में, जुड़े
42	**कनेक्शन**	जोड़ना
43	**कनेक्शन**	जुड़ाव, योग
44	**कन्वर्ट होना**	धर्म परिवर्तन करना
45	**कम्पलीट**	सम्पूर्ण
46	**करंट**	विद्युत, बिजली का प्रवाह, वर्तमान
47	**कल्ट, Cult**	a पंथ
48	**कॉमन**	आम, एक जैसा

49	**कोर्स**	शरुआती ज्ञान
50	**क्यू**	पंक्ति
51	**क्रिएटर**	रचयिता
52	**क्रिएशन**	निर्माण, सृजन
53	**क्रिस्चियन मिशनरी**	aईसाई धर्म के प्रचार करनेवाला अनुयायी पहला नर-नारी
54	**गार्डन ऑफ़ अल्लाह**	सतयुग, स्वर्ग
55	**गिफ्ट**	भेंट
56	**गॉड क्रिएटर इस वन**	रचयिता भगवान् एक है
57	**गॉडइज ओमनी प्रेजेंट**	भगवान् सर्वव्यापी है
58	**गॉडफादर इज नॉलेजफूल**	सर्वज्ञ, सर्वज्ञानी, सर्वज्ञाता भगवान
59	**गॉडफादरली मिशन**	भगवान का दूत-कर्म
60	**गॉडफादरली स्टूडेंट लाइफ**	ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन
61	**गॉडली बुलबुल**	भगवान का ज्ञान सुनानेवाले
62	**गॉडली स्टूडेंट**	भगवान शिक्षक से पढनेवाले
63	**ग्रेड**	कक्षा, पद
64	**चांस**	अवसर
65	**चार्ट, Chart**	दैनन्दिनी, पोतामेल
66	**जंक**	कूड़ा-कचरा, कट, लोहे को बिगाड़ने वाली चीज़
67	**जेल बर्ड्स**	कारावास
68	**टर्न लाना**	परिवर्तन करना
69	**टाइटल**	उपाधि, नाम
70	**टू लेट**	सबसे लास्ट के भी पीछे
71	**टेम्पटेशन**	इच्छा जिससे थोड़े समय का सुख मिल सकता है, परन्तु दीर्घकाल में दुःख दायक /प्रलोभन, लोभ
72	**टेम्पटेशन**	लालच

73	**टेम्परारी**	थोड़े समय के लिए, क्षणिक
74	**टॉकी**	आवाज़ वाली/की (दुनिया
75	**टॉकी**	आवाज वाला चलचित्र
76	**ट्रस्टी**	साक्षी
77	**ट्रिब्यूनल, Tribunal**	न्यायाधिकरण न्यायिक कार्य के लिए गठित एक प्रकार की समिति
78	**ट्रेटर**	[illegible] एक ओर शान उभरता जाता है तो दूसरी ओर विकारों में पड़कर आसुरी चलन चलकर डिससर्विस
79	**डबल लाइट**	हल्केपन के साथ रौशनी का ताज
80	**डलहेड**	बुद्धू
81	**डायरेक्टर**	दिग्दर्शक
82	**डिग्री डीग्रेड**	श्रेणी कम होना
83	**डिनायस्टी**	राजवंश या वंश-परम्परा/ ब्राह्मणों का डिनायस्टी नहीं है। ब्राह्मणों का कुल है, डिनायस्टी तब कहा जाता है
84	**डिपेंड करना**	सहारे रहना, भरोसा करना
85	**डिससर्विस**	गलत सन्देश जाना, नकारात्मक प्रभाव पड़ना
86	**डीटी वर्ल्ड सोवरिनिटी**	देवताई, विश्व की बादशाही
87	**डीनायस्टी**	वंश
88	**डेविल**	शैतान
89	**डेविल वर्ल्ड**	नर्क, कलियुग
90	**थॉट रीडर**	संकल्प को पढनेवाला
91	**थ्रू, Through**	द्वारा
92	**नेचुरल**	प्राकृतिक
93	**नेचुरल कर्म**	सामान्य/प्राकृतिक कर्म
94	**नेचुरल कैलमिटी**	प्राकृतिक आपदा
95	**नेचुरल ब्यूटी**	प्राकृतिक सौन्दर्य

96	**परमिट**	परवाना, आज्ञा-पत्र
97	**परमिशन**	अनुमति
98	**पाम्प, (Pomp)**	बहुत ज़ोर (धूमधाम), अतिज़ोर, आडंबर।
99	**पार्ट**	भाग, खण्ड, हिस्सानाटक के पात्र का खेल का हिस्सा
100	**पार्टीशन**	अलग होना
101	**पावरफुल**	शक्तिशाली
102	**पास विद ऑनर**	100% प्रतिशत, जिनको कोई रोड़ा के बिना परमिशन जाना हैं
103	**पास्ट-प्रेजेंट-फ्यूचर**	भूतकाल-वर्तमानकाल-भविष्यकाल
104	**पॉवरहाउस**	शक्ति-स्त्रोत
105	**पोज़ Pose**	मुद्रा, विशिष्ट आकृति धारण करना
106	**प्रैक्टिकल लाइफ**	व्यवहारिक जीवन
107	**प्रॉपर्टी**	मिल्कियत
108	**प्रॉपर्टी**	जायदाद
109	**प्रोस्पेरिटी**	सम्पन्नता
110	**प्लानिंग**	कल्पना/उपाय करना
111	**फमिलिअरिटी, Familiarity**	सम्बन्ध बढ़ाना, ज्ञान से अलग चर्चा
112	**फर्स्टक्लास नेचर क्योर**	सबसे बढ़िया प्राकृतिक चिकित्सा
113	**फाइन**	शुद्ध, साफ़
114	**फाउंडर**	स्थापक
115	**फाउंडेशन**	जड़
116	**फायरफ्लाई**	जुगनू
117	**फिलोसोफी**	दर्शन, तत्वज्ञान
118	**फुल्ली, Fully**	अच्छी तरह
119	**फॉर्म**	आकृति, संस्कार, रीति, सादृश्य

120	**फॉलो फ़ादर**	बाप के नक़्शे कदम पर चलना
121	**फोरेनर**	विदेशी, परदेसी
122	**फोलोवर**	मतावलंबी, अनुयायी
123	**फ्रैक्शन**	भाग, टुकड़ा
124	**फ्लड**	बाढ़
125	**फ्लाइंग स्क्वाड**	उड़न दस्ता
126	**फ्लोलेस टीचर**	निर्दोष, त्रुटिरहित शिक्षक
127	**बर्थ प्लेस**	जन्म स्थान
128	**बर्थ राईट**	जन्मसिद्ध अधिकार
129	**बांधेलियाँ, Bandheliyan**	बंधनयुक्त आत्माए
130	**बायोग्राफी**	आत्मकथा
131	**बायोस्कोप, Bioscope**	टी.वी./फिल्म
132	**बैरिस्टर Barristor**	वकील
133	**बॉडी कांशिअसनेस**	देह अभिमान
134	**ब्रदरहुड**	विश्व भ्रातृभाव, सार्वभौम सहिष्णुता
135	**ब्राइडग्रूम, Bride Groom**	दूल्हा
136	**ब्राइड्स**	दुल्हन
137	**ब्लिसफुल**	परम सुख/मोक्ष दाता
138	**भागंती**	सबकुछ सुन के फिर ज्ञान छोड़नेवाले
139	**मूवी**	बिना आवाज वाला चलचित्र
140	**मेमोरेंडम**	स्मरणलेख
141	**मेयर**	महापालिकाध्यक्ष
142	**मैनर्स**	चाल-चलन
143	**मैनर्स**	सभ्यता, अच्छी आदतें
144	**मैसेंजर**	दूत, सन्देश ले जानेवाला/लानेवाला
145	**मोर्टल**	विनाशी
146	**मोस्ट बिलवेड गॉड फ़ादर**	सबसे/सबका प्यारा शिवबाबा

147	**मोस्ट बिलेवेड बाप**	सबसे प्यारा बाप
148	**यूनिवर्स**	विश्व/ब्रह्मांड/सम्पूर्ण जगत
149	**राईट डायरेक्शन**	सही दिशा
150	**राईट हैण्ड**	आज्ञाकारी, पसंदीदा
151	**राईट-रॉग**	सही-गलत
152	**रिटर्न**	वापसी सेवा
153	**रिफ्यूजी**	विस्थापित
154	**रियलाईज**	बात को पहचानना/समझना
155	**रियलाईजेशन कोर्स**	समझ कर धारण करना, स्व यानी मैं आत्मा हूं शिव पिता परमात्मा की संतान हूं इसको जानना अर्थात अनुभव करना अर्थात अपनी असली पहचान मिलना।
156	**रियलाईज़ेशन कोर्स**	ज्ञान की धारणा/अनुभूति की पढ़ाई
157	**रिलिजन**	धर्म, मज़हब
158	**रिलिजन**	धर्म
159	**रिलीजियस माइंडेड**	आस्तिक, आस्थावान, धरमाऊ
160	**रिवाइज्ड कोर्स**	अव्यक्त मुरली की फिर से पढ़ाई (हर इतवार को जो पढ़ी जाती)
161	**रिहर्सल**	पूर्व प्रयोग
162	**रीफाइन**	शुद्ध करना, साफ़ करना
163	**रूहानी यूनिवर्सिटी**	आत्मा की कॉलेज
164	**रूहानी सोशल वर्कर**	समाज सेवक आत्माओं का (भगवान)
165	**रेस Race**	दौड़, स्पर्धा
166	**रेस्पोंसिबल**	जिम्मेवार
167	**रॉयल घराना**	राजाई घराना
168	**रॉयल फॅमिली**	रॉयल (राजाई) देवताई परिवार, सतयुग में विश्व महाराजन (महाराजा) या राजा के परिवार में होना।
169	**लंगर उठाना**	मोह त्यागना
170	**लकी स्टार**	भाग्यशाली सितारा

171	**लवली**	सुन्दर, मनभावन फीचर व्यक्तित्व
172	**लाइट का क्राउन**	पवित्रता का ताज
173	**लाइट हाउस**	समंदर में नावों को रास्ता दिखाने के लिए रौशनी का टावर
174	**लिफ्ट**	गति से ऊपर ले जाने वाला साधन
175	**लिबरेटर**	आज़ादी दिलानेवाला या जीवनमुक्ति और मुक्ति देने वाला
176	**लिबेरेटरगाइड**	छुड़ाकर रास्ता दिखानेवाला
177	**लीप सेंचुरी**	अधिक-शतक (जैसे अधिक मास/दिन)
178	**लॉर्ड कृष्णा**	राजा कृष्ण, सतयुग में जन्म लेने वाली पहली आत्मा
179	**वंडरफुल सिन सीनरी**	विस्मयकारी दृश्य
180	**वर्थ नाट पेनी**	कौड़ी तुल्य जीवन
181	**वर्थ पाउंड**	हीरे तुल्य
182	**वर्ल्ड माइटी**	विश्वशक्तिशाली
183	**वाइब्रेशन**	कम्पन, संकल्पों की तरंगे
184	**वाईसलेस**	अवगुण रहित, विकार रहित, दोष रहित, गुणवान, दिव्य
185	**वायलेंस**	हिंसा
186	**विन**	जीत, विजय
187	**वी आर एट वॉर**	हम लोग लड़ाई के मैदान में हैं
188	**वेस्ट**	नकारा, व्यर्थ,बिना काम के
189	**वेस्ट ऑफ़ एनर्जी**	शक्ति व्यर्थ गवांना
190	**वेस्ट ऑफ़ टाइम**	समय व्यर्थ गँवाना
191	**वेस्ट ऑफ़ मनी**	धन व्यर्थ गँवाना
192	**वैरायटी**	विभिन्न, प्रकार
193	**वैरायटी Variety**	भिन्न-भिन्न, अलग-अलग, तरह तरह के
194	**वैल्युएबल**	कीमती, महँगा, ज़रूरी, महत्वपूर्ण
195	**सतयुगी डीटी वर्ल्ड**	सतयुगी दैवी दुनिया का साम्राज्य

196	**सब-स्टेशन**	शक्ति प्राप्त कर आगे भेजनेवाले
197	**सरेंडर**	समर्पित
198	**सरेंडर**	समर्पण
199	**सर्जन Surgeon**	शल्य-चिकित्सक
200	**सर्विसेबुल**	सेवाधारी
201	**साइड सिन**	जैसे ट्रैन में जाते तो खिड़की में देखते तो साइड सीन्स आते और पास होते रहते। साइड सीने अर्थात हम अपने आपको जीवन में आने वाली परिस्थितियों (सीन्स) में साइड होकर चलें वे आएंगे और पास होते जाएंगे।
202	**साइलेंस**	शांति
203	**सालवेज**	बचाना, छुड़ाना, मुक्त कराना
204	**साल्वेशन Salvation**	दुखों से छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला, रक्षा करने वाला
205	**सिल्वर ऐज**	त्रेतायुग
206	**सुप्रीम पावर**	परम शक्ति
207	**सुप्रीम सोल**	परमात्मा
208	**सेक्क्रिन**	सबसे मीठा
209	**सेण्टर**	सेवाकेंद्र, मध्य बिंदु
210	**सेनोटोरियम**	अस्पताल
211	**सेफ्टी**	सुरक्षा के उपाय
212	**सेर्विसेबुल**	सेवा करनेवाला
213	**सेल्फ कण्ट्रोल**	मनजीत, अपनी आज्ञा में, स्व पर नियंत्रण, संयम रखना
214	**सोर्स ऑफ़ इनकम**	आय का साधन
215	**स्कालरशिप**	विद्या, पाण्डित्य, छात्रवृति, विद्वता सरलीकृत अर्थ
216	**स्टाम्प, Stamp**	सिक्का, चिन्ह
217	**स्टिमर/स्टिम्बर**	भांप से चलता पानी का जहाज

218	**स्टूडेंट लाइफ इस बेस्ट लाइफ**	विद्यार्थी जीवन श्रेष्ठ जीवन
219	**स्टेटस**	पद
220	**स्ट्राइक**	हड़ताल
221	**स्पिरिचुअल**	अध्यात्मिक
222	**स्वीट होम (स्वीट साइलेंस होम)**	मुक्ति धाम, परमधाम
223	**हमजिंस**	बन्धु, दोस्त, मित्र
224	**हाईएस्ट**	श्रेष्ठतम, सर्वोच्च, सबसे ऊंचा, परम
225	**हाफ कास्ट**	ज्ञान मिलते भी पूरा धारण नहीं करते और अपवित्र भी बनते
226	**हिरोशिमा**	जापान का शहर जहाँ परमाणु बम फोड़ा गया था (द्वितीय विश्व युद्ध में)
227	**हिस्ट्री जियोग्राफी रिपीट होना**	ड्रामा के इतिहास-भूगोल की कल्प पहले की तरह हूबहू पुनरावृत्ति
228	**हेल**	नर्क
229	**हेवेनली गॉड फ़ादर**	सतयुगी दुनिया का निर्माण करने वाले भगवान
230	**होलिएस्ट**	परम पवित्र
231	**होली हँस**	हँस जैसे पवित्र
232	**हयूमन गुलशन**	मानवों का बगीचा (दुनिया)